

विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

हमने संविधान के अनुच्छेद 44 को 73 वर्षों के उपरान्त भी नहीं समझा

संविधान सभा में निदेशक तत्वों पर बोलते हुये डा. अम्बेडकर ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा था कि निदेशक तत्वों का आशय यह है कि भविष्य में विधायिका तथा कार्यपालिका दोनों ही इन तत्वों के प्रति केवल पूजनीय घोषणायें बनकर ही न रह जावें, बल्कि इन्हें कार्यपालिका तथा विधायिका के सभी कार्यों का आधार बना दिया जो इसके बाद देश में शासन के मामले में किये जावें।

निदेशक तत्व संविधान के प्रभावी भाग हैं न्यायमूर्ति के.एस. हेगडे ने कहा है कि संविधान चाहता है कि उद्देशिका में निर्धारित लोकतंत्रात्मक कल्याणकारी राज्य के आदर्शों को प्राप्त किया जावे। उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि संविधान का लक्ष्य एक ऐसे कल्याणकारी समाज का निर्माण करना है जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय हमारी राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करे।

संविधान उद्देशिका में देश के लोगों ने वचन दिया है कि राज्य सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय देगा। संविधान में राजनैतिक न्याय का उल्लेख कर उन्हें मूल अधिकार दिये जो संविधान के भाग 3 में हैं और सामाजिक आर्थिक न्याय देने के कर्तव्य का उल्लेख भाग 4 में। यहा प्रश्न यह है कि क्या अनुच्छेद 37 के आधार पर राज्य न्याय देने से मना कर सकता है? उत्तर होगा नहीं अर्थात् राज्य कर्तव्य व जनता के अधिकारों में बाधायें खड़ी नहीं कर सकता।

हम यदि इन अधिकारों व कर्तव्यों की समालोचना करें तो 72 वर्ष की आजादी के बाद भी अनुच्छेद 44 को लागू नहीं करना, राज्य की उदासीनता ही कही जायेगी।

सन 1966 को राजनैतिक संंधि थी यही निर्देशन देती है कि तीनों प्रकार के न्याय जनता को मिलने चाहिये। यह भी स्पष्ट हो चुका है मूल अधिकार व नीति निदेशक तत्वों में नागरिकों के अधिकार व राज्य के कर्तव्य ही है ये सब मानन अधिकार हैं। अतः प्रवर्तनशील हैं और एक देश एक कानून के सिद्धान्त को मानते हुये समान नागरिक संहिता लागू करना राज्य का दायित्व है।

संविधान को प्रारूपण समिति ने बनाया है जिसके अध्यक्ष डा. अम्बेडकर थे। इसे 26.1.1950 को लागू किया। समान नागरिक संहिता का उल्लेख अनुच्छेद 44 में आता है। कई दिनों तक इस अनुच्छेद पर बहस होने के बाद अनुच्छेद 44 को अन्य अनुच्छेदों के साथ भारत का संविधान बना। अनुच्छेद 44 में कहा गया, नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहिता होगी। इसके अस्तित्व के बावत अब प्रश्न करना, अर्थहीन है। अतः जनता की राय जानना उचित नहीं है। हम संविधान को पुनः नहीं लिख सकते।

अनुच्छेद 44 संविधान का अभिन्न अंग है। संविधान का संशोधन अनुच्छेद 368 के अनुसार होगा किन्तु संविधान के बेसिक प्रावधान (Features) को संशोधित नहीं किया जा सकता। अनुच्छेद 44 का संशोधन नहीं हो सकता। इसे संविधान सभा में बहस के उपरान्त पारित किया गया था और 26.1.1950 से इसी रूप में संविधान का भाग है। सुप्रीम कोर्ट के समक्ष कई रिट याचिकायें पेश हो चुकी हैं जिनमें एक ही प्रश्न मुस्लिम भाईयों की ओर से उठाया गया था कि अनुच्छेद 44 अनुच्छेद 37 के कारण प्रवर्तनीय नहीं है। मुस्लिम पक्ष द्वारा यह आवाज उठाई गई कि समान नागरिक संहिता उनके धर्म, कुरान व शरियत के विरुद्ध है अतः उन्हें मान्य नहीं है। मुस्लिम भाईयों का यह भी कहना है कि अनुच्छेद 44, अनुच्छेद 25 तथा उनके रिवाजों में हस्तक्षेप है। आजादी से पूर्व अंग्रेजों के काल में समान नागरिक संहिता जैसा कानून नहीं था। अखण्ड भारत के समय जब सिन्धु भारत का अंग था, उस समय वहां मुसलमानों पर हिन्दू संवसेशन एक्ट लागू था।

26.1.1950 के बाद मुस्लिम भाईयों ने अनुच्छेद 44 को संशोधित करने अथवा समाप्त करने के हेतु कोई कार्यवाही सुप्रीम कोर्ट में नहीं की। समान नागरिक संहिता के विषयों में तलाक, विवाह, निर्वाह भत्ता, गोद व उत्तराधिकार के विषय आते हैं।

ट्रिपल तलाक के विषय में सुप्रीम कोर्ट ने उसे संविधान के विरुद्ध माना है और मुसलमानों ने इसको शरियत के अनुसार मानकर धर्म में दखल कहा है। इस केस में अनुच्छेद 25 पर विशद विवेचन है।

भारतीय दण्ड संहिता द्वारा मुसलमानों के दण्ड के कानून में दखल किया है। मुस्लिम कानून में (शरियत) चोरी करने वाले व्यक्ति को हाथ काटने की सजा है जबकि भारतीय दण्ड संहिता में मेल की सजा है। अतः यह उचित होगा कि अभियुक्त से यह पूछा जावे कि उसे सजा भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार दी जावे या धर्म (शरियत) के अनुसार।

सन 1985 में सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो के केस में तथा श्रीमती जोर्डन डेग के विवाद में समान नागरिक संहिता लागू करने की बात की है और इसके 10 वर्ष बाद भी इसे सरला मुदगल के केस में दोहराया है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि सन्ध् सभाज में धर्म व वैयक्तिक कानून में कोई संबंध नहीं है। बहुविवाह लोक नीति के विरुद्ध है। देश में गोवा में समान नागरिक संहिता लागू है और उत्तराखण्ड भी इस ओर बढ़ रहा है।

विधि आयोग व विधि आयोग के अध्यक्ष ने अलग-अलग विचार अभिव्यक्त किये हैं। पूर्व मुख्य न्यायाधीश व विधि आयोग के चेयरमैन गजेन्द्र गडकर ने विधि आयोग के अध्यक्ष के रूप में कहा था, ‘अनुच्छेद 44 को लागू न करना भारतीय डेमोक्रेसी की असफलता है।’ जस्टिस छागला ने कहा कि ‘अनुच्छेद 44 को बाध्यकारी मानना चाहिये।’

देश सेक्युलर है अतः समान नागरिक संहिता का संविधान में प्रावधान उचित है। समान नागरिक संहिता कई देशों में है। ब्रिटेन, फ्रान्स, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, गोवा, आयरलैंड, बंगलादेश, मलेशिया, तुर्की, इण्डोनेशिया, सुडान, मिश्र, पाकिस्तान आदि देश में यह समान नागरिक संहिता लागू है।

हर धर्म, जाति के लिये यह कानून है, कई मुस्लिम देशों में भी यह लागू है। बंगलादेश, पाकिस्तान तो कभी भारत के ही अंग थे वहां भी यह लागू है। इससे पुरुष व महिला दोनों को तलाक का अधिकार मिलेगा। शादी की उम्र बढ़ेगी, जिसके कारण महिला शादी से पूर्व ग्रेजुएट हो सकेगी। समान नागरिक संहिता लागू होने से ऐसे सभी कानून समाप्त हो जावेंगे जिसमें लैंगिक पक्षपात दिखाई देता है। जब मुस्लिम देशों में यह सफलता के साथ लागू है कि भारत में इसका विरोध क्यों हो? कई कानूनों का सरलीकरण होगा और विवादों में समझौता हो सकेगा बहुविवाह रूकेगा।

विधि आयोग ने 31.8.2018 में फिनाली सुनवाई में सुधार के हेतु एक Consultation Paper भेजा था। विधि आयोग ने अपनी अघूरी रिपोर्ट में कहा, Formulation of a Uniform Civil Code (UCC) is neither necessary nor desirable at this stage। चूंकि तीन वर्ष से अधिक होने के बाद भी विषय पर कोई काम नहीं हो सकता यद्यपि हित रखने वाले सभी लोगों को प्रश्नावली भेजी थी। इस कार्य में तीन वर्ष का समय हो चुका था अतः 22वें लॉ कमीशन ने पुनः प्रश्नावली भेजी है और 30 दिन में उत्तर, रिप्रेजेंटेशन, अपील आदि भेजने को लिखा है। इसके अतिरिक्त Woring Paper भी भेजा जा सकता है। विधि आयोग ने निम्न पते पर अपना उत्तर भेजने का आग्रह किया है:—

Member Secretary, Law Commission of India, 4th Floor, Lok Nayak Bhawan, Khan Market, New Delhi 110003

लॉ कमीशन ने व्यक्तिगत सुनवाई के लिये भी लिखा था।

यहां यह लिखना समीचीन होगा कि द्वितीय विधि कमीशन पुनः सुनवाई की कार्यवाही करेगा ऐसा उनकी विज्ञप्ति/आदेश दिनांक 14.06.2023 से मालूम होता है कि सुनवाई पूर्ववर्ती विषय पर ही होगी Formulation of a Uniform Civil Code (UCC) is neither necessary nor desirable at this stage-

लॉ कमीशन की दोनों रिपोर्ट्स (Reports) न तो रेफरेंस के अनुरूप हैं और न आदेश है। उनकी इन्हटु का कोई आधार भी नहीं है। वह अवैध व अधिकर शुन्य है। न तो ये कमीशन को रिपोर्ट है और न निर्णय ही। चूंकि विधानसभा ने अनुच्छेद 44 को पारित किया है अतः यह कहना कि यूसीसी की न तो आवश्यकता है और न कोई औचित्य।

इलेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकर राजाखान ने यह राय दी है कि यूसीसी लागू करना भाजपा के लिये चुनाव जीतने का एक टूल है वहीं मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने कहा है कि समान नागरिक संहिता गैरजरूरी, अव्यावहारिक और देश के लिए हानिकारक है।

लेखक ने समान नागरिक संहिता पर शायद 4-5 लेख लिखे हैं। प्रत्येक लेख में नवीनता लाने का प्रयास है। लेखक का अपना विचार है कि अनुच्छेद 44 यद्यपि संविधान के भाग 4 का एक अभिन्न अंग है और अनुच्छेद 37 के होते हुये भी प्रवर्तनीय है क्योंकि भाग 4 के विषयों पर कई कानून बन चुके हैं जो देश के शासन में मूलभूत हैं, अतः तत्वों को लागू करना राज्य का कर्तव्य है। अनुच्छेद 44 संविधान का मॉड्यूल है अतः इसे संशोधित नहीं किया जा सकता और न इसे संविधान से हटाया जा सकता है। चूंकि लॉ कमीशन ने अपनी प्रश्नावली भेज दी है अतः हित रखने वालों को अपना पक्ष रखना चाहिये साथ ही लॉ कमीशन के अधिकार क्षेत्र को भी चुनौती देना चाहिये।

—अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन

पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

26 घण्टे अखण्ड सूर्य नमस्कार करके आयुर्वेद विश्वविद्यालय ने कीर्तिमान बनाया

जोधपुर, (कासं)। “कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं होता, कोई तबीयत से पत्थर तो उछालो यारों” की कहावत चरितार्थ की है, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर ने अखण्ड सूर्य नमस्कार का विश्व कीर्तिमान स्थापित करके।

9वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से आयुर्वेद विश्वविद्यालय के उत्साही और संकल्पबद्ध शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा जोधपुर शहर के हृदय-स्थल घण्टाघर पर 26 घण्टों तक सर्वाधिक अवधि का निरन्तर अखण्ड सूर्यनमस्कार करके आज विश्व कीर्तिमान रचा गया है। कुलपति प्रो. वैद्य प्रदीप कुमार प्रजापति की प्रेरणा

■ 21 जून प्रातः से प्रारंभ हुआ अखण्ड सूर्य नमस्कार 26 घण्टों तक सर्वाधिक अवधि तक निरन्तर जारी रहा

से बुधवार को प्रातः 8.30 बजे से घण्टाघर पर आरंभ हुये अखण्ड सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का गुरुवार को प्रातः 10.30 बजे समारोहपूर्वक समापन हुआ।

समारोह की मुख्य अतिथि राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने समारोह को संबोधित करते हुये विश्वविद्यालय द्वारा संचालित लोकप्रिय कार्यक्रमों स्वर्णप्राशन, पंचकर्म, क्षारसूत्र एवं योग की प्रशंसा करते हुये आज अखण्ड सूर्यनमस्कार के विश्व कीर्तिमान रचने के लिये विश्वविद्यालय को बधाई दी। ट्रैफिक पुलिस अधिकारी निशा भटनागर समारोह की विशिष्ट अतिथि थी। कार्यक्रम के प्रारंभ में कुलसचिव



जोधपुर के घण्टाघर पर 26 घण्टों तक सर्वाधिक अवधि का निरन्तर अखण्ड सूर्य नमस्कार करके विश्व कीर्तिमान रचा गया।

सीमा कविया एवं प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा ने अतिथिगण का साफा एवं पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति ने सर्वाधिक अवधि अखण्ड सूर्यनमस्कार का विश्व कीर्तिमान स्थापित करने के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के साथ-साथ जोधपुर की जनता को बधाई दी।

कुलपति प्रो. प्रजापति ने योग प्रभारी एवं सूर्यनमस्कार कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. चन्द्रभान शर्मा एवं कार्यक्रम में सहभागी बने डाबर इंडिया लिमिटेड के अधिकारी प्रहलाद राय को समारोह में सम्मानित किया। समारोह में प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये योग प्रभारी डॉ. चन्द्रभान शर्मा ने बताया कि घण्टाघर में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त राज्य

की सभी 40 आयुष महाविद्यालयों तथा विद्याभारती से जुड़ी विद्यालयों के लगभग 9000 हजार छात्र-छात्राओं ने भी सूर्यनमस्कार करते हुए वचुंअल माध्यम से सहभागिता की। उन्होंने बताया कि शहर के योग विशेषज्ञों चेतन प्रकाश सेन, प्रेमरतन सोतवाल, रमेश चन्द्र शर्मा, मंगलाराम आदि ने घण्टाघर पर आकर संभागियों का उत्साहवर्धन किया। डीन रिसर्च एवं मीडिया प्रभारी प्रो. प्रेम प्रकाश व्यास ने बताया कि इस कीर्तिमान के आयोजन में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, शहर के योगसाधकों एवं विदेशी पर्यटकों सहित लगभग 200 व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा, डीन रिसर्च प्रो. प्रेम प्रकाश व्यास, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजाराम अग्रवाल, डीन एकेडमिक डॉ. राजेश

कुमार शर्मा, चीफ वार्डन प्रो. चन्दनसिंह, चिकित्सालय अधीक्षक प्रो. प्रमोद मिश्रा, शल्य तंत्र विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश गुप्ता, प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभागाध्यक्ष डा. ए. नीलिमा, रोग विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द गुप्ता, स्त्वस्वतृत्त विभागाध्यक्ष डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, मौलिक सिद्धान्त विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र चाहर, मानव संसाधन विकास केन्द्र के निदेशक डा. राकेश शर्मा, फार्मसी निदेशक डा. विजयपाल त्यागी, प्रशासन विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञानप्रकाश शर्मा, अगद तंत्र विभागाध्यक्ष डॉ. ऋतु कपूर, पंचकर्म विशेषज्ञ प्रो. महेश शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दिनेश शर्मा, डॉ. अरूण दाधीच, डॉ. श्योराम शर्मा, डॉ. संजय श्रीवास्तव, डॉ. मोनिका वर्मा, डॉ. रश्मि शर्मा, डॉ. मनोभा गोयल, डॉ.

दिनेश राय, डॉ. गजेन्द्र दुबे तथा सहायक प्रोफेसर डॉ. राजीव सोनी, डॉ. अशोक यादव, डॉ. नवनीत दाधीच, डॉ. पूजा पारिक, डॉ. भानू प्रिया, डॉ. प्रियंका इनाणिया, डॉ. हेमन्त राजपुरोहित डॉ. अवधेश, होम्योपेथी प्राचार्य डा. गौरव नागर, डॉ. राजीव खन्ना, डॉ. राजेश कुमारवत, डॉ. नरेन पटवा, डॉ. अभिषेक भारद्वाज, डॉ. यशस्वी तथा योग प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. धन्या सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकगण सहित स्नाश्रकोतर तथा पी एच डी अध्येतागण उपस्थित थे। कुलसचिव श्रीमती सीमा कविया ने सहयोग के लिए पुलिस प्रशासन, नगर निगम प्रशासन, मीडिया तथा जोधपुर की जनता का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. प्रेम प्रकाश व्यास तथा डॉ. दिनेश शर्मा ने किया।

मॉडिफाईड गाड़ी से 1111 दिन की यात्रा पर निकले मेहता दंपती जालोर पहुंचे

जालोर, (कासं) जयपुर के एक दम्पती अपना शोक पूरा करने के लिए पूरे भारत घूमने के लिए 1111 दिन की यात्रा पर निकले हैं। यात्रा के लिए इन्होंने गाड़ी मॉडिफाई करवाई, ताकि होटल की जरूरत यात्रा के दौरान नहीं पड़े।

जयपुर निवासी 64 वर्षीय अनिल मेहता अपनी 57 वर्षीय पत्नी गीता के साथ 1111 दिन के लिए पूरे भारत की यात्रा पर निकले हैं। अनिल बताते हैं उन्हे घूमने का शोक है। इसलिए वे अक्सर ट्रेवल करने निकले जाते हैं। लेकिन शोक के चलते इस बार उन्होंने कुछ अलग करने की सोची। वे अपनी पत्नी के साथ पूरे 1111 दिन भारत के विभिन्न हिस्सों में बितायेगे। 23 अप्रैल को उन्होंने अपने सफर की शुरुआत की थी। खास बात यह है कि वे इस दौरान किसी होटल में नहीं



1111 दिन की यात्रा पर निकले मेहता दम्पती जालोर पहुंचे।

उहरेंगे। वे जयपुर से गोवर्धन, मथुरा, मुरादाबाद, कुमाउ, दिल्ली, अजमेर, पुष्कर, बुटारी, जोधपुर होते हुए जालोर पहुंचे हैं। दम्पती ने होटल में नहीं उहरने के लिए एक गाड़ी को

मॉडिफाई करवाई। करीब डेढ लाख रुपये से 37 दिन में उनकी गाड़ी इस दूर के लिए तैयार की गई है। उन्होंने अपनी गाड़ी को इस तरह मॉडिफाई करवाया कि गाड़ी में ही बेड लगा है।

जहां वे आराम करते हैं। गाड़ी में बैड की सुविधा के अलावा खाना बनाने के लिए एक छोटा कीचन भी है। साथ ही उन्होंने सोलर प्लेट लगवाई है। जिससे जरूरी कार्य के लिए उन्हें बिजली मिल

■ 23 अप्रैल को अपने सफर की शुरुआत की थी, खास बात यह है कि वे इस दौरान किसी होटल में नहीं उहरेंगे

■ मेहता दम्पती 1111 दिन का दूर कर लिफ्टा बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड दर्ज करवाना चाहते हैं

सके। गाड़ी में एक टायलेट भी है व उनके पास हमेशा पानी का स्टोरेज भी रहता है। मेहता दम्पती 1111 दिन का दूर कर लिफ्टा बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड दर्ज करवाना चाहते हैं।

उमस और गर्मी से उल्टी, दस्त और बुखार के मरीज बढ़े

पावटा, (निर्सं)। गर्मी और उमस का लोगों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा व निजी अस्पतालों की ओपीडी में उल्टी, दस्त, बुखार, सांस रोग, खून की कमी, लीवर में पानी की कमी के मरीजों की संख्या बढ़ी है।

अस्पताल में पहले फिजिशियन से जांच करने के लिए करीब 450 तक मरीज पहुंचते थे लेकिन यह संख्या अब बढ़कर लगभग 650 से अधिक हो चुकी है। उमस के कारण अब लोग पसीने से तरबतर हो रहे हैं। जांच करवाने के लिए सुबह से ही मरीजों की अस्पतालों में लंबी कतार



अस्पताल में मरीज को देखते चिकित्सक।

लगना शुरू हो जाती है। अस्पताल की ओपीडी में अब फिजिशियन के पास

ही सबसे अधिक मरीज जांच करवाने के लिए कतार में लगे हुए दिखाई देते

■ अस्पताल में पहले करीब 450 तक मरीज पहुंचते थे लेकिन यह संख्या 650 से अधिक हुई

है। वहीं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा प्रभारी देवेन्द्र शर्मा, डॉ. अशोक बाज्या व गुप्ता हॉस्पिटल से डॉ. रवि अंजली गुप्ता, एसजीएन हॉस्पिटल निदेशक डॉ. जय राम यादव, डॉ. दर्शन परिधा, मैक्स संजीवनी हॉस्पिटल से डॉ. सुरेंद्र यादव ने बताया कि मौसम में बदलाव के बाद ओपीडी में पहले

से मरीजों की संख्या बढ़ी है। गर्मी के कारण उल्टी, दस्त और बुखार के मरीज अधिक आ रहे हैं।

गर्मी से बचाव करें व पेय पदार्थों का अधिक सेवन कर खुद को लोग स्वस्थ रखें। मरीजों को गर्मी से बचाव के लिए धूप में कम से कम बाहर निकलें, गर्मी में अधिक से अधिक पानी का सेवन करें, जूस, नींबू पानी, शिर्कजी व अन्य पेय पदार्थों का अधिक सेवन करें, तंद और फास्ट फूड का सेवन न करें, पेट दर्द, सिर दर्द व अन्य किसी तरह की दिक्कत आती है तो डॉक्टर की सलाह लेने की बात कही।

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2080, मघा नक्षत्र शनिवार प्रातः 7:18 तक, वैश्व योग रात्रि 4:31 तक, बव करण प्रातः 6:41 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरु-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।
आज कुमार योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज स्कन्ध पंचमी, द्वारकाधीश पाटोत्सव, साईं टेऊर्राम जयन्ती, हेरा पंचमी है।
सर्वश्रेष्ठ चीघड़िया: चर सूर्योदय से 7:21 तक, लाभ-अमृत 7:21 से 10:46 तक, शुभ 12:29 से 2:12 तक, चर 5:37 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:20

मेघ

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बने लगेगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कन्या

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

●●●●●

⊕

●●●●●

⊕

●●●●●

⊕

●●●●●